



International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 12, Issue 4, July – August 2025



INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.028

पर्यटन शिक्षा : उच्च शिक्षा में नवाचार, विकास और सतत भविष्य की ओर एक कदम

राजकुमार बैरवा¹, डॉ. हेमंत मंगल²

शोधार्थी, भूगोल विभाग, राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरु (राजस्थान), भारत¹

आचार्य, भूगोल विभाग, राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरु (राजस्थान), भारत²

सारांश

पर्यटन, जो कभी केवल मनोरंजन का साधन माना जाता था, आज एक बहुआयामी क्षेत्र बन गया है जो समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, और पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं पर प्रभाव डालता है। इसके साथ ही, यह वैश्विक स्तर पर आर्थिक विकास और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का एक प्रभावी माध्यम बन चुका है। पर्यटन के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए, इसकी समग्र समझ और पेशेवर कौशल विकसित करने की आवश्यकता को स्वीकार किया गया है। इस परिप्रेक्ष्य में, उच्च शिक्षा में पर्यटन से संबंधित शिक्षा का महत्व और उपयोगिता अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है। पर्यटन शिक्षा न केवल छात्रों को इस क्षेत्र के व्यावसायिक पक्षों से अवगत कराती है, बल्कि उन्हें सतत विकास, सांस्कृतिक संवेदनशीलता, और वैश्विक नागरिकता की ओर भी प्रेरित करती है। यह विषय न केवल रोजगार के व्यापक अवसर प्रदान करता है, बल्कि पर्यटन उद्योग को नए विचार, नवाचार, और योजनाओं से समृद्ध भी करता है। पर्यटन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों को इस क्षेत्र के विविध पहलुओं जैसे प्रबंधन, विपणन, सांस्कृतिक समझ, और पर्यावरण संरक्षण की गहन जानकारी प्रदान करना है। यह शिक्षा छात्रों को वैश्विक और स्थानीय संदर्भों में पर्यटन की भूमिका को समझने में मदद करती है। पर्यटन शिक्षा केवल एक पेशेवर प्रशिक्षण का माध्यम नहीं है, बल्कि यह छात्रों को एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है, जो उन्हें आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, और पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखने में सक्षम बनाती है। उच्च शिक्षा में पर्यटन शिक्षा का समावेश न केवल छात्रों के लिए रोजगार की संभावनाओं को बढ़ाता है, बल्कि यह समाज और पर्यावरण के लिए एक सकारात्मक बदलाव का माध्यम भी बनता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में पर्यटन शिक्षा का उच्च शिक्षा में महत्व एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला गया है।

मूल शब्द – पर्यटन शिक्षा, कौशल विकास, पेशेवर प्रशिक्षण, सतत विकास



प्रस्तावना :

पर्यटन उद्योग विश्व की अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख स्तम्भ बनकर उभरा है, जो न केवल रोजगार के व्यापक अवसर प्रदान करता है, बल्कि देशों के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और प्राकृतिक धरोहरों को वैश्विक स्तर पर प्रदर्शित करने का माध्यम भी बनता है। इस उद्योग की निरंतर प्रगति और प्रतिस्पर्धात्मकता सुनिश्चित करने के लिए उच्च शिक्षा में पर्यटन शिक्षा का समावेश अति आवश्यक हो गया है। पर्यटन शिक्षा न केवल छात्रों को पर्यटन प्रबंधन, आतिथ्य उद्योग, और स्थायी पर्यटन के सिद्धांतों का व्यावसायिक ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि उन्हें क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर इस उद्योग से जुड़ी चुनौतियों और अवसरों के लिए तैयार करती है। इसके माध्यम से स्थायी विकास के सिद्धांतों को अपनाते हुए पर्यावरण और संस्कृति के संरक्षण पर भी बल दिया जाता है। आज, जब पर्यटन उद्योग तकनीकी नवाचारों और वैश्वीकरण के कारण तेजी से बदल रहा है, तो पर्यटन शिक्षा की महत्ता और अधिक बढ़ जाती है। यह न केवल कुशल मानव संसाधन विकसित करने में सहायक है, बल्कि स्थानीय समुदायों के विकास, पर्यावरण संरक्षण और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस प्रकार, उच्च शिक्षा में पर्यटन शिक्षा को बढ़ावा देना केवल उद्योग की प्रगति के लिए ही नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक समृद्धि के लिए भी अनिवार्य है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जो न केवल करियर के अवसर प्रदान करता है, बल्कि वैश्विक समझ और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को भी प्रोत्साहित करता है। पर्यटन शिक्षा का उद्देश्य न केवल कुशल पेशेवर तैयार करना है, बल्कि इसे एक व्यापक दृष्टिकोण के साथ जोड़ा जाना चाहिए, जो स्थायी विकास, सांस्कृतिक संवर्धन और पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता दे। यह छात्रों को पर्यटन उद्योग से जुड़े विभिन्न पहलुओं, जैसे गंतव्य प्रबंधन, आतिथ्य सेवाएं, विपणन रणनीतियाँ, और पर्यावरणीय प्रभावों की समझ विकसित करने में मदद करती है। इसके साथ ही, पर्यटन शिक्षा स्थानीय समुदायों को आर्थिक लाभ पहुंचाने और उनकी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने में सहायक सिद्ध होती है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में, पर्यटन शिक्षा न केवल राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी रोजगार और नवाचार के अवसर प्रदान करती है। इसलिए, उच्च शिक्षा संस्थानों में पर्यटन शिक्षा का समावेश समाज और राष्ट्र दोनों के सर्वांगीण विकास के लिए अनिवार्य हो गया है।

उच्च शिक्षा में पर्यटन शिक्षा का महत्त्व :

पर्यटन शिक्षा आज के वैश्विक परिदृश्य में उच्च शिक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई है। यह न केवल छात्रों को पर्यटन उद्योग के विभिन्न पहलुओं का गहन ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि उन्हें इस क्षेत्र में व्यावसायिक दक्षता और नवाचार के लिए तैयार करती है। पर्यटन उद्योग विश्व की अर्थव्यवस्था का एक मुख्य स्तम्भ है, जो रोजगार सृजन, विदेशी मुद्रा अर्जन, और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से विकास के अनेक अवसर प्रदान करता है।

पर्यटन शिक्षा के प्रमुख महत्त्व उच्च शिक्षा में पर्यटन शिक्षा के महत्त्व का विश्लेषण निम्न बिंदुओं के अंतर्गत किया जा सकता है—

- **आर्थिक विकास में योगदान** — पर्यटन शिक्षा छात्रों को उद्योग से जुड़े कौशल सिखाती है, जो उन्हें रोजगार और उद्यमिता के बेहतर अवसर प्रदान करती है। यह स्थानीय और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में सहायक होती है।
- **सांस्कृतिक संवर्धन** — पर्यटन शिक्षा के माध्यम से छात्रों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर और परंपराओं के महत्त्व को समझने और उनके संरक्षण के लिए प्रेरित किया जाता है। यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान और विविधता के प्रति सम्मान बढ़ाने में भी सहायक है।
- **स्थायी पर्यटन का विकास** — यह शिक्षा पर्यावरणीय और सामाजिक स्थिरता को प्राथमिकता देने वाले स्थायी पर्यटन के सिद्धांतों को बढ़ावा देती है। इसके माध्यम से छात्रों को पर्यावरणीय संरक्षण और स्थायी विकास के प्रति जागरूक किया जाता है।
- **वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयारी** — पर्यटन शिक्षा छात्रों को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार प्रशिक्षित करती है, जिससे वे वैश्विक पर्यटन उद्योग में प्रतिस्पर्धा कर सकें।
- **समग्र विकास** — यह शिक्षा प्रबंधन, विपणन, आतिथ्य, और नेतृत्व कौशल जैसे बहुआयामी क्षेत्रों में दक्षता प्रदान करती है, जो छात्रों के समग्र विकास में सहायक होती है।

उच्च शिक्षा अध्ययन में पर्यटन शिक्षा के बदलते आयाम :

पर्यटन शिक्षा समय के साथ एक विशिष्ट शैक्षणिक क्षेत्र के रूप में उभरकर उच्च शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य, तकनीकी प्रगति, और सतत विकास की प्राथमिकताओं ने पर्यटन शिक्षा के स्वरूप और दृष्टिकोण को व्यापक रूप से बदल दिया है। अब यह केवल आतिथ्य और गंतव्य प्रबंधन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके अंतर्गत सांस्कृतिक धरोहर संरक्षण, ईको-टूरिज्म, डिजिटल पर्यटन, और स्थायी पर्यटन जैसे आयाम भी शामिल हो गए हैं।



पर्यटन शिक्षा के बदलते आयाम :

पर्यटन शिक्षा के बदलते आयाम उच्च शिक्षा के क्षेत्र में इसकी बढ़ती प्रासंगिकता और आवश्यकता को दर्शाते हैं। यह न केवल छात्रों को रोजगार योग्य बनाती है, बल्कि उन्हें वैश्विक जिम्मेदारियों और स्थायी विकास के लक्ष्यों को समझने में भी सहायक होती है। बदलते समय के साथ, पर्यटन शिक्षा का यह विस्तार समाज, पर्यावरण, और अर्थव्यवस्था के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। जिनका अध्ययन निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत किया जा सकता है—

- **डिजिटल और तकनीकी नवाचार** — ऑनलाइन बुकिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, और वर्चुअल रियलिटी जैसे तकनीकी उपकरण पर्यटन शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बन गए हैं। छात्रों को इन तकनीकों के उपयोग में प्रशिक्षित किया जा रहा है ताकि वे आधुनिक पर्यटक की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें।
- **सतत विकास और ईको-टूरिज्म** — पर्यावरणीय स्थिरता पर बढ़ते जोर के कारण पर्यटन शिक्षा में ईको-टूरिज्म और सतत विकास पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। छात्रों को सिखाया जाता है कि पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुए पर्यटन गतिविधियाँ कैसे संचालित की जाएं।
- **ग्लोबल और लोकल टूरिज्म का संतुलन** — वैश्वीकरण के प्रभाव से पर्यटन शिक्षा में अंतरराष्ट्रीय मानकों को शामिल किया गया है, लेकिन इसके साथ ही स्थानीय सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहरों के संरक्षण और उनके प्रचार-प्रसार पर भी बल दिया जा रहा है।
- **बहु-विषयक दृष्टिकोण** — अब पर्यटन शिक्षा में प्रबंधन, विपणन, इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र, और पर्यावरण विज्ञान जैसे विभिन्न विषयों का समावेश किया जा रहा है। यह छात्रों को बहुआयामी दृष्टिकोण प्रदान करता है।
- **पर्यटन और सामुदायिक विकास** — पर्यटन शिक्षा का उद्देश्य केवल उद्योग के विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि स्थानीय समुदायों की आर्थिक और सामाजिक प्रगति में योगदान देना भी है।
- **नई चुनौतियों के लिए प्रशिक्षण** — महामारी, जलवायु परिवर्तन, और बदलते उपभोक्ता व्यवहार जैसी वैश्विक चुनौतियों के संदर्भ में छात्रों को समाधान-आधारित शिक्षा प्रदान की जा रही है।

पर्यटन शिक्षा में भविष्य की संभावनाएँ :

पर्यटन उद्योग विश्व की सबसे तेजी से विकसित होने वाली आर्थिक गतिविधियों में से एक है। जैसे-जैसे यह उद्योग विकसित हो रहा है, पर्यटन शिक्षा के क्षेत्र में भी नई संभावनाएँ उभर रही हैं। यह शिक्षा न केवल छात्रों को पेशेवर कौशल प्रदान करती है, बल्कि उन्हें वैश्विक उद्योग की बदलती मांगों और चुनौतियों के लिए तैयार करती है। पर्यटन शिक्षा में भविष्य की संभावनाएँ अत्यधिक व्यापक और प्रभावशाली हैं। डिजिटल युग, सतत विकास, और वैश्वीकरण के इस दौर में यह शिक्षा छात्रों को वैश्विक उद्योग की आवश्यकताओं को समझने और



उसमें उत्कृष्टता प्राप्त करने में सक्षम बनाएगी। साथ ही, यह स्थानीय और वैश्विक स्तर पर रोजगार, नवाचार, और सांस्कृतिक संवर्धन के लिए नए अवसर प्रदान करेगी।

- **डिजिटल टूरिज्म और तकनीकी नवाचार** – भविष्य में डिजिटल प्लेटफॉर्म, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, और वर्चुअल टूरिज्म जैसी तकनीकों का महत्व बढ़ेगा। पर्यटन शिक्षा के अंतर्गत इन तकनीकों का प्रशिक्षण छात्रों को तकनीकी रूप से कुशल बनाकर उनके लिए व्यापक अवसर उत्पन्न करेगा।
- **सतत और जिम्मेदार पर्यटन** – जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण के बढ़ते महत्व को देखते हुए, सतत पर्यटन के क्षेत्र में विशेषज्ञता की मांग बढ़ेगी। ईको-टूरिज्म, हरित पर्यटन, और स्थायी विकास से जुड़े पाठ्यक्रम भविष्य में शिक्षा का एक अभिन्न हिस्सा बनेंगे।
- **वैश्विक और क्षेत्रीय पर्यटन** – अंतरराष्ट्रीय पर्यटन के साथ-साथ स्थानीय और क्षेत्रीय पर्यटन को भी बढ़ावा देने के लिए कुशल मानव संसाधन की आवश्यकता होगी। इससे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और पर्यटन शिक्षा को नया आयाम मिलेगा।
- **पर्यटन प्रबंधन और उद्यमिता** – पर्यटन उद्योग में नई कंपनियों और स्टार्टअप्स के लिए अवसर बढ़ रहे हैं। पर्यटन शिक्षा छात्रों को उद्यमिता, नवाचार, और गंतव्य प्रबंधन के क्षेत्र में प्रशिक्षित कर उन्हें आत्मनिर्भर बना सकती है।
- **विशेषीकृत पर्यटन** – साहसिक पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, और वेलनेस टूरिज्म जैसे क्षेत्रों में विशेषज्ञता की बढ़ती माँग के कारण इनसे जुड़े पाठ्यक्रमों का विस्तार होगा।
- **संकट प्रबंधन और जोखिम तैयारी** – महामारी, प्राकृतिक आपदाएँ, और सुरक्षा संबंधी चिंताओं ने पर्यटन उद्योग में संकट प्रबंधन के महत्व को बढ़ा दिया है। इस क्षेत्र में विशेषज्ञता भविष्य में अत्यधिक मांग में रहेगी।
- **पर्यटन नीति और अनुसंधान** – पर्यटन उद्योग की स्थिरता और विकास के लिए शोध और नीतिगत ढाँचे की आवश्यकता बढ़ेगी। इससे पर्यटन शिक्षा के अंतर्गत अनुसंधान और नीति निर्माण में कैरियर के नए अवसर खुलेंगे।

पर्यटन शिक्षा में विकास से संबंधित चुनौतियाँ एवं संभावित समाधान :

पर्यटन शिक्षा के विकास में कई चुनौतियाँ हैं, जो इस क्षेत्र की प्रगति और प्रभावशीलता को बाधित करती हैं। ये चुनौतियाँ तेजी से बदलती वैश्विक आवश्यकताओं, प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रभाव, और स्थानीय-सांस्कृतिक परिदृश्यों के अनुकूलन से जुड़ी हैं। इन चुनौतियों का समाधान खोजकर पर्यटन शिक्षा को अधिक प्रभावशाली और व्यावहारिक बनाया जा सकता है।



चुनौतियाँ :

- **अधुनातन पाठ्यक्रम की कमी** – पर्यटन शिक्षा के पाठ्यक्रम अक्सर तेजी से बदलती उद्योग की जरूरतों और आधुनिक तकनीकी नवाचारों से मेल नहीं खाते।
- **प्रशिक्षित और अनुभवी शिक्षकों की कमी** – पर्यटन शिक्षा के लिए विशेषज्ञ शिक्षकों की उपलब्धता सीमित है, जिससे छात्रों को गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण नहीं मिल पाता।
- **औद्योगिक अनुभव का अभाव** – शिक्षा और उद्योग के बीच समन्वय की कमी से छात्रों को व्यावहारिक अनुभव और वास्तविक उद्योग की जरूरतों को समझने में कठिनाई होती है।
- **स्थायी विकास पर ध्यान न देना** – कई संस्थानों में पर्यावरण संरक्षण और सतत पर्यटन के पहलुओं पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता।
- **अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा** – कई शैक्षणिक संस्थानों में आधुनिक प्रयोगशालाओं, उपकरणों और पर्यटन सिमुलेशन तकनीकों की कमी है।
- **रोजगार के अवसरों में असमानता** – ग्रामीण और छोटे पर्यटन स्थलों से जुड़े छात्रों के लिए रोजगार के अवसर सीमित हैं, जबकि बड़े शहरी केंद्रों में यह अधिक केंद्रित है।
- **अनुसंधान और नवाचार की कमी** – पर्यटन शिक्षा में अनुसंधान और नीतिगत ढाँचों पर सीमित ध्यान दिया जाता है, जो दीर्घकालिक विकास में बाधा उत्पन्न करता है।

संभावित समाधान :

- **अद्यतन पाठ्यक्रम निर्माण** – पर्यटन उद्योग की वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम को नियमित रूप से संशोधित किया जाए। इसमें डिजिटल टूरिज्म, ईको-टूरिज्म और प्रबंधन जैसे क्षेत्रों को शामिल किया जाए।
- **प्रशिक्षित शिक्षकों की भर्ती** – उद्योग विशेषज्ञों और प्रशिक्षित शिक्षकों को पर्यटन शिक्षा में शामिल किया जाए। शिक्षकों को नए प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से अद्यतन ज्ञान दिया जाए।
- **शिक्षा और उद्योग का समन्वय** – शैक्षणिक संस्थानों और पर्यटन उद्योग के बीच साझेदारी को बढ़ावा दिया जाए। छात्रों को इंर्नशिप और ऑन-द-जॉब प्रशिक्षण के अवसर दिए जाएं।
- **सतत पर्यटन पर जोर** – पर्यावरणीय और सांस्कृतिक स्थिरता को पाठ्यक्रम में प्राथमिकता दी जाए। छात्रों को ईको-टूरिज्म और हरित प्रथाओं के महत्व के प्रति जागरूक किया जाए।
- **आधुनिक तकनीकी बुनियादी ढाँचा** – संस्थानों में अत्याधुनिक प्रयोगशालाएँ, पर्यटन सॉफ्टवेयर, और सिमुलेशन तकनीक उपलब्ध कराई जाएं।



- **ग्रामीण और क्षेत्रीय पर्यटन को बढ़ावा** – ग्रामीण और स्थानीय स्तर पर पर्यटन विकास को प्राथमिकता दी जाए। इससे रोजगार के अवसरों में समानता आएगी।
- **अनुसंधान और नवाचार** – पर्यटन शिक्षा में अनुसंधान और नीति-निर्माण को बढ़ावा दिया जाए। इसके लिए अनुसंधान फंडिंग और उद्योग-शिक्षा सहयोग बढ़ाया जाए।
- **सामाजिक जागरूकता** – छात्रों को पर्यटन के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों के बारे में शिक्षित किया जाए, जिससे वे जिम्मेदार पर्यटन को बढ़ावा दे सकें।

निष्कर्ष :

उक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षा केवल करियर निर्माण का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक विकास का आधार भी है। एक सशक्त और शिक्षित समाज के निर्माण के लिए उच्च शिक्षा का प्रसार और गुणवत्ता में सुधार अनिवार्य है। इसे प्रत्येक व्यक्ति के लिए सुलभ और समावेशी बनाना समय की आवश्यकता है। पर्यटन शिक्षा में चुनौतियाँ उद्योग के विकास और स्थायित्व में बाधा डाल सकती हैं, लेकिन सही नीतियों और रणनीतियों के माध्यम से इनका समाधान संभव है। यदि पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण, और उद्योग के बीच मजबूत समन्वय स्थापित किया जाए, तो यह न केवल छात्रों के लिए बल्कि पर्यटन उद्योग और समाज के लिए भी लाभकारी सिद्ध होगा।

References:

1. World Tourism Organization (UNWTO). (2021). Tourism Education and Training: Challenges and Opportunities. Madrid: UNWTO. Retrieved from <https://www.unwto.org>
2. Airey, D., & Tribe, J. (2005). An International Handbook of Tourism Education. Elsevier.
3. Cooper, C., & Hall, C. M. (2019). Contemporary Tourism: An International Approach (4th ed.). Routledge.
4. Leung, X. Y., Sun, J., & Bai, B. (2018). Thematic trends and global research in tourism higher education. Journal of Hospitality, Leisure, Sport & Tourism Education, 23, 22–38. <https://doi.org/10.1016/j.jhlste.2018.05.002>
5. Hsu, C. H. C., & Xiao, H. (2016). Development of tourism education research: A systematic review. Tourism Management Perspectives, 19, 163–170. <https://doi.org/10.1016/j.tmp.2016.06.003>
6. Hall, C. M., Scott, D., & Gössling, S. (2020). Pandemics, transformations, and tourism: Be careful what you wish for. Tourism Geographies, 22(3), 577–598. <https://doi.org/10.1080/14616688.2020.1759131>
7. Dredge, D., & Jenkins, J. (2007). Tourism Planning and Policy. Wiley.
8. Kim, J.-H., & Park, J.-H. (2021). The role of sustainability in tourism education. Journal of Sustainable Tourism, 29(4), 529–548. <https://doi.org/10.1080/09669582.2020.1772812>



9. United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization (UNESCO). (2020). Education for Sustainable Development: A roadmap. Paris: UNESCO.
10. Moscardo, G., & Murphy, L. (2014). There is no such thing as sustainable tourism: Re-conceptualizing tourism as a tool for sustainability. *Sustainability*, 6(5), 2538–2561. <https://doi.org/10.3390/su6052538>
11. Pizam, A., & Shani, A. (2009). The nature of the hospitality industry: Present and future managers' perspectives. *International Journal of Hospitality Management*, 28(2), 245–252. <https://doi.org/10.1016/j.ijhm.2008.10.008>
12. Sharpley, R. (2021). Tourism education and sustainable development: Principles and practice. *Tourism and Sustainability*, 7(3), 57–73. <https://doi.org/10.1108/ts.2021.008>



INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA



International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com